शिव अमृतवाणी | By Vikas Rawat |

हे शिव शंकर उमापति
हे शिव भोलेनाथ
कभी नहीं तुम छोड़ना हे
महादेव मेरा साथ
संचय किया शिव पुराण से
ये शिव का गुणगान
अब आपके हाथों में है
भोले देखो मेरी आन

सदा शिव सागर हैं देखो
सदा शिव हैं फूल
ब्रह्मा विष्णु और शंकर जी
इनके ही हैं रूप
तुम ही निशा हो तुम रात्रि
तुम जीवन की हो भोर
हे शिव आपके हाथों में है
सारे जग की डोर

पीकर विष जग पर किया
तुमने एक उपकार
नीलकंठ महाराज जी तेरी
होती जय जयकार
तीनों लोक अधीन तुम्हारे
देख सको त्रिकाल
मैं तीसरा नेत्र जड़ा हुआ है
जगतपिता तेरे भाल

दया के सिंधु महादेव सुनो
मेरे पशुपति नाथ
भवसागर में कभी ना तुम
छोड़ना मेरा साथ
रौद्र रूप धर बन गए तुम
शिव से महाकाल
तुम्हारे दर्शन से मिटे
दुख भक्तों के तत्काल
हर हर महादेव
हर हर महादेव

हे शिव शंभू हे भोलेनाथ
अमरनाथ बाबा केदारनाथ
सहस्र नाम हैं नाथ तुम्हारे
नीलकंठ हे पशुपति नाथ
मेरे भोलेनाथ मेरे भोलेनाथ

शिव शंकर तेरी महिमा न्यारी
नंदी की तुम करते सवारी
शिव का नाम अनंत अपार

शिव शिव रत्न है हितकारी
शिव का सुमिरन मंगल करता
साधक के सब संकट हरता
जिस घर हो शिव का गुणगान
वो घर खुशियों से है भरता
मेरे भोलेनाथ मेरे भोलेनाथ

शिव की जटा में गंगा धारा
शिव ने ही धरती पे उतारा
पतित को पावन कर देती है
हर लेती है मन के विकार
शिव ही तो भवसागर हैं
और शिव पूरे गुणवान
शिव की ना उत्पत्ति हुई ना
होगा शिव का अंत

जो जन शिव शंकर को पुकारे
खुलते हैं उसके मुक्ति के द्वारे
उसको अंधेर ना कभी सताए
कर दे ये घर उसके उजियारे
मेरे भोलेनाथ मेरे भोलेनाथ

जो शंकर की शरण में आए
भवसागर से वो तर जाए
पुष्प बने राहों के कंकड़
जो शंकर की महिमा गाए
शिव ही सागर शिव ही नदियां
शिव ही समय और शिव ही सदियां
शिव में ये ब्रह्मांड समाया
शिव ही डुबोए और शिव ही खेवाईया
मेरे भोलेनाथ मेरे भोलेनाथ

उमानाथ सुनो हे शिव शंकर
मुझको बना लो अपना किंकर
सांसों की माला से तुमको
जपूं निरंतर भजूं निरंतर
हे शंकर कैलाशपति शिव
हे शिव शंभूनाथ
अपनी करुणा मुझपे करो
रखना सर मेरे हाथ

शिव ही जन्म मृत्यु के दाता
शिव में ही संसार समाता
शिव ही आंधी शिव ही तूफान
शिव ही जग के भाग्य विधाता
मेरे भोलेनाथ मेरे भोलेनाथ

शिव ही जगत के देखो स्वामी
इनसा नहीं कोई दूजा दानी
इनसे ना कभी कुछ छुप पाए
शिव शंकर हैं अंतर्यामी

शिव अमृतवाणी रसपान
अर्थ है अपना भाग्य बनाना
युगों से सोई किस्मत जागे
दुख के बादल का छंट जाना
मेरे भोलेनाथ मेरे भोलेनाथ

शिव शंकर का भेद निराला
इनमें है अग्नि इनमें है ज्वाला
जान लो तुम शिव की गहराई
शिव ही धरा अम्बर पाताल
हे शिवनाथ कैलाशपति मेरे
पूरण करना काज
जन्म दिया प्रभु आपने तो
आप ही रखना लाज

शिव नाम ही खुद में मंत्र है ये
रक्षा कवच एक यंत्र है ये
थकता कभी ना ये रुकता है
शिव न्याय का ही तंत्र है ये
मेरे भोलेनाथ मेरे भोलेनाथ

शिव शंकर हैं एक सन्यासी
कहते इन्हें श्मशान के वासी
शिव संतोषी शिव निष्छल हैं
जयते जयते जय हे कैलाशी
कर लो बस तुम शिव की साधना
मिट जाती है मन की वासना
समय रहते ना समझे ये तो
रह जाती फिर खुद को त्रासना
मेरे भोलेनाथ मेरे भोलेनाथ

शिव अमृतवाणी गुणगान
जिन दानव ने किया रसपान
हे शिव तुमसे विनती करते
करो शंभू उनका कल्याण
शिव भक्ति हर सपने को
कर देती साकार
सारा जग एक सवाली है
शिव ही साहूकार
मेरे भोलेनाथ मेरे भोलेनाथ
मेरे भोलेनाथ मेरे भोलेनाथ

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b6%e0%a4%bf%e0%a4%b5-%e0%a4%85%e0%a4%ae%e0%a5%83%e0%a4%a4%e0%a4%b5%e0%a4%be%e0%a4%a3%e0%a5%80-by-vikas-rawat/